

\* वैदिक शिक्षा \* अर्थ \* परिभाषा \* उद्देश्य \* विशेषता

Introduction: - शिक्षा व्यक्त के सर्वांगीण विकास, सामाजिक तथा राष्ट्रीय प्रगति और संस्कृति के उत्थान के लिए अनिवार्य है। विश्व जिस समय अपनी आवश्यकताओं में डूबा था, तथा उसमें असुस्थता व्याप्त थी उस समय हमारे देश की शिक्षा पद्धति (System of Education) पूर्णतः (विकास - सभी क्षेत्रों में) सर्वांगीणता, धार्मिक, सांस्कृतिक ज्ञान को अपना लक्ष्य बनाये हुई थी। उस समय भी हमारे देश की सुस्थता व संस्कृति विश्व के शिखर पर विद्यमान थी। उसी को हम वैदिक कालीन शिक्षा उजाली या प्राचीन शिक्षा उजाली के नाम से जानते हैं।

(वैदिक शिक्षा का काल)

\* Period of Vedic System of Education: - वैदिक शिक्षा का ऋग्वेद के रचना काल जो लगभग 2500 ई. पूर्व से लेकर बौद्ध धर्म के उदयकाल जो लगभग 500 ई. पूर्व तक है, को माना जाता है, इस दौरान जो शिक्षा उजाली विद्यमान थी उसे वैदिक शिक्षा का काल कहते हैं। इस समय की शिक्षा केवल पुस्तकों के ज्ञान तक सीमित नहीं थी बल्कि सादा जीवन उच्च विचार के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था थी।

\* Meaning and Definition of Vedic Edu. (परिभाषा एवं अर्थ):-

1. → Broader Meaning (व्यापक अर्थ)
2. → Narrow Meaning (संकुचित अर्थ)

P.T.O

(i) व्यापक अर्थ :-

इसका संबंध जीवन पर्यन्त चलनेवाली शिक्षा से था, जो मनुष्य के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उसे सभ्य बनाती थी। इस प्रकार मनुष्य जीवन भर छात्र ही रहता था।

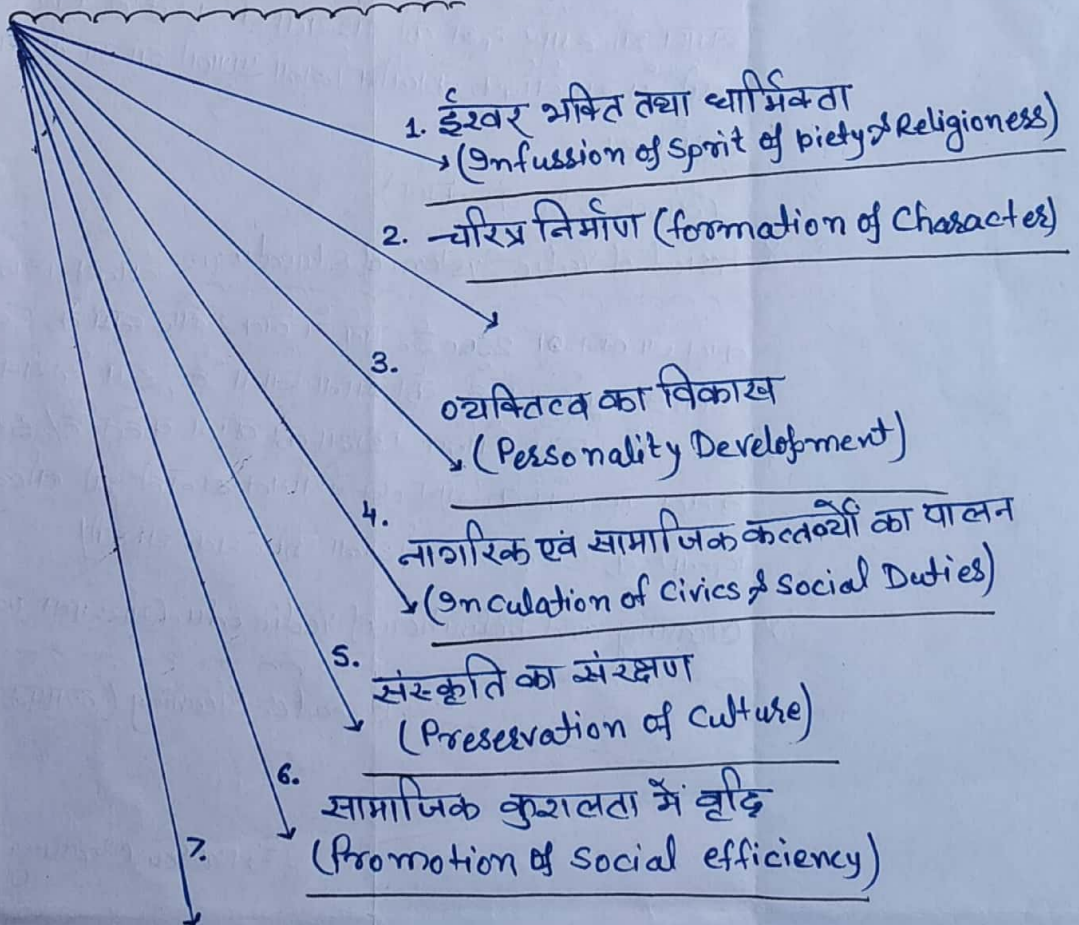
(ii) संकुचित अर्थ :-

वैदिक शिक्षा जो औपचारिक होती थी, क्योंकि बालक को जीवन के शुरु के कुछ साल आश्रम में रहकर ब्रह्मचर्य (शादी नहीं करना) का पालन करना पड़ता था और शुरु से जान प्राप्त करना था।

अतः उपरोक्त विवेचनाओं से स्पष्ट है की प्राचीन भारतीय विचार धारा तथा जीवन पूरी तरह धर्म से ओतप्रोत थी। वेद, भारतीय शिक्षा के मूल स्रोत माने जाते हैं, इसलिए हमारी प्राचीन शिक्षा पणाली के प्रमुख आधार वेद थे।

(उद्देश्य)

\* Aims of Vedic Education:





1. ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता :- वैदिक काल में धर्म को केंद्र में रखकर उसी आधार पर शिक्षा प्रदान की जाती थी। प्रहसि प्रथम शिक्षक होते थे और वह छात्रों को ईश्वर भक्ति तथा धर्म के नियमों का कठोरता से पालन कराते हुए शिक्षा प्रदान करते थे और इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न संस्कारों की व्यवस्था थी। इसलिए गुरुकुल का वातावरण धार्मिक होता था।

2. चरित्र निर्माण :- वैदिक कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालकों के चरित्र का निर्माण करना था। वैदिक आदर्शों के आधार पर ब्रह्मचर्य का पालन सदाचार व उच्च विचार आदि का पालन करके इस उद्देश्य की प्राप्ति की जाती थी।

3. व्यक्तित्व का विकास :- वैदिक कालीन शिक्षा का तीसरा उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का विकास करना था। छात्रों में आत्म विश्वास, संयम, सम्मान, विवेक का प्रयोग कर इनको जान सकें और इस आधार पर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकें।

4. नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का पालन :- वैदिक कालीन शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य ब्राह्मचारियों में नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का पालन करने योग्य बनाना भी था। अभ्रम के पश्चात गृहस्थ जीवन की भावना का विकास किया जाता था कि वे समाज में एक सामाजिक णजी के रूप में रहकर अपने दायित्व को समझते हुए किस प्रकार का कार्य करना है कि शिक्षा दी जाती थी।

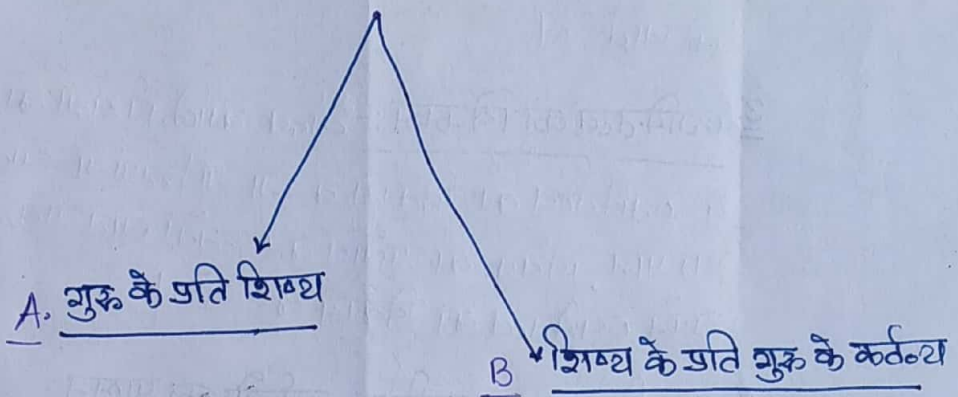
5. संस्कृति का संरक्षण :- वैदिक कालीन शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं उसका प्रसार करना भी था। बालकों को इस प्रकार की शिक्षा दी जाती थी कि वे अपनी संस्कृति और साहित्य का संरक्षण कर सकें।

6. सामाजिक कुशलता में वृद्धि :- वैदिक कालीन शिक्षा में बालक को जीवियार्जन संबंधी व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था ताकि वह अपने भवी जीवन को सुचारु रूप में चलाने में समर्थ हो सकें। इसलिए दाय अपने परिवार की व्यवसाय में कुशलता प्राप्त कर केवल अपने



परिवार तथा समाज के लिए ही नहीं बल्कि राष्ट्र कल्याण के योग्य भी हो जाते हैं।

\* शिक्षक और शिक्षार्थी :- वैदिक कालीन शिक्षा में गुरु और शिष्य का संबंध बहुत निकट का था। यहाँ इस वैदिक काल में शिक्षक और शिक्षार्थी का संबंध पिता - पुत्र के समान था। गुरु शिष्य की न केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति और शिक्षा प्रदान करते थे, बल्कि वह अपना स्नेह और सहानुभूति भी उसे देते थे। गुरु के प्रति शिष्यों के निम्नलिखित कर्तव्य होते थे।



A. गुरु के प्रति शिष्य :-

- (i) सुबह सबसे पहले गुरु का चरण स्पर्श करता था।
- (ii) पूजा की सामग्री का प्रबंध करते थे।
- (iii) आश्रम की गाथों को चरते थे।
- (iv) गुरु के ज्येष्ठ में काम करते थे।
- (v) गुरु के शृङ्खली के छूटे बड़े कार्य करते थे।
- (vi) गुरु के आदेश का पालन करना अपना कर्तव्य समझते थे।
- (vii) गुरु के लिए भिक्षा मांगते थे।
- (viii) गुरु को गौरवपूर्ण स्थान देते थे।

B. शिष्य के प्रति गुरु के कर्तव्य :-

- (i) गुरु शिष्य का संबंध पिता - पुत्र के समान था।
- (ii) शिष्यों के सुख-दुख का ख्याल रखना।

- (iii) छात्रों की जिज्ञासा को शांत करना।
- (iv) छात्रों को भावी जीवन के लिए तैयार करना।
- (v) शिक्षकों की समस्याओं का समाधान करना।
- (vi) छात्रों को बुरी आदतों से दूर करना।
- (vii) स्वस्थकी देखभाल करना, चरित्र विकास करना।
- (viii) छात्रों में आदर्श गुणों का विकास।

### \* छात्रों का दैनिक जीवन का नियम (Daily life of Student):-

- (i) प्रातः काल उठना। [Early Rising] - सुबह उठने से पहले उठना।
- (ii) प्रार्थना। [Pray] - चरण स्पर्श कर, सुबह-शाम प्रार्थना।
- (iii) स्नान। [Bath] - नदी को उठाने के लिए स्नान करना।
- (iv) खान-पान। [Food] - दो बार खाना या पूरे दिन में, मीस, शराब, पान, वासी न खाना।
- (v) वेश-भूषण। [Dress] - ब्रह्मचर्य-काले भूषण, क्षत्रिय चित्रितार भूषण एवं वैश्य कच्छे की खाल पहनने थे।
- (vi) आचार व्यवहार। [
- (vii) आदतों में सादगी [Simplicity of Habits] सभी जातिधर्मों को समान रहना था।
- (viii) नैतिक अनुशासन। [Moral Discipline]
- (ix) अविवाहित जीवन। [Brahmacharya]
- (x) दण्ड। [Punishment]

### \* शिक्षा व्यवस्था (System of Education):-

वैदिक शिक्षा प्रणाली को समझने के लिए निम्न बिंदुओं पर विचार करना आवश्यक है।

- (i) निःशुल्क शिक्षा:- इस समय में गुरु के आश्रम में जो बालक आते उन्हें निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी, मगर शिक्षा उपरांत दाय का कर्तव्य था कि वह गुरु दीक्षणा दे।
- (ii) शिक्षा संस्थाएँ:- शिक्षण कार्य गुरुकुल, प्रह्वी आश्रम में रहकर छात्रों को शिक्षा देते थे। अतः वैदिक काल में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अधिक प्रचलित थी।



(iii) पाठ्यक्रम :- वैदिक काल में वेदों की शिक्षा के अतिरिक्त दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष तथा तर्क विज्ञान को उच्च स्थान दिया जाता था।

(iv) शिक्षण विधि :- वैदिक काल में शिक्षण विधि मौखिक थी और यह गुरु द्वारा कताई शई सभी कतों को याद करते थे।

(v) परीक्षा-उणाली :- परीक्षा प्रत्येक दिन नये पाठ पढ़ाने से पूर्व ली जाती थी।

(vi) स्त्री शिक्षा :- वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। कविकाओं को साहित्य, नृत्य, संगीत, काव्य रचना, दर्शन आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

(vii) व्यवसायिक शिक्षा - वैदिक कालीन शिक्षाओं में धर्म के अतिरिक्त प्रत्येक बालक को उसकी इच्छा के अनुसार व्यवसायिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। तर्क, बालक अपने गृहस्थ जीवन को सुचारु रूप से चला सकें।

Conclusion :-